ISSN 2319-8095
PROGRESSIVE RESEARCH JOURNAL
VOL 9 No 01 DEC 2016

नवगीत की अभिव्यक्तिगत प्रवृत्तियाँ

* सुधांशु कुमार श्रीवास्तव

नवगीत की अभिव्यक्तिगत प्रवृत्तियाँ पूर्ववर्ती काव्य विधाओं से भिन्न हैं । नवगीतकारों ने अपनी उद्भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए नवीन शब्दावली, नवीन भाषा, नवीन लय, ताजगी पूर्ण बिम्ब, नये ढंग के छन्दों आदि का प्रयोग किया है । इसकी पद योजना तथा टेक पद्धति में भी नवीनता के दर्शन होते हैं । इसकी प्रमुख अभिव्यक्तिगत प्रवृत्तियां निम्नलिखित हैं :–

1. नवगीत की भाषिक संरचना–

नवगीतों की भाषा लोक भाषा से सम्पृक्त होने के कारण लोक शब्दावली से संयुक्त है । नवगीत की भाषा आधुनिक जीवन के स्पन्दनों की अभिव्यक्ति करती है । अतः इसकी भाषा दैनिक जीवन के प्रयोग में होने वाली भाषा है, "नये प्रतीक, नये अप्रस्तुत, नये छन्द विधान एवं नयी भाषा की उपादेयता को नवगीत ने भी स्वीकार किया है किन्तु एक प्रकार के नैसर्गिक रागबोध एवं भावात्मक सन्तुलन के योग से उसने काव्यगत लयात्मकता एवं प्रेषणीयता की भी रक्षा की है ।" नवगीत की भाषा रूढ़िवादी या शुद्धतावादी न होकर लोकवादी है । नवगीतकारों ने अपने गीतों में कृत्रिम या अव्यवाहारिक भाषा के स्थान पर स्वभाविक और व्यावहारिक भाषा का प्रयोग किया है । इस प्रकार की भाषा को नवगीतकारों ने ताजगीपूर्ण बिम्बों, यथोचित प्रतीकात्मक अप्रस्तुत विधान तथा मुहावरों एवं कहावतों आदि के समुचित प्रयोग से समृद्ध किया है । "नवगीत की भाषिक नवीनता, ताजगी, सांकेतिकता और प्रतीक योजना ही उसकी सर्वप्रमुख पहचान बन गई है ।'

मैक्सिम गोर्की की मान्यता थी कि "भाषा का सबसे समृद्ध रूप जनसाधारण की अपनी बोलियों में निहित होता है । नवगीतकारों ने जनसाधारण की बोलियों को काव्य भाषा का रूप दिया है । नवगीत की भाषा में उर्दू, अंग्रेजी और हिन्दी के प्रचलित तत्सम तथा देशज शब्दों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में मिलता हैं । नवगीतकारों ने चित्रमयी, संगीतमयी, दार्शनिक, सहज और सांकेतिक भाषाओं का भी प्रयोग किया है । प्रयोग के सम्बन्ध में नवगीतकारों की धारणा है कि वास्तविक प्रयोग वह है जो विचार प्रयोग के साथ–साथ भाषा, छन्द, लय, ताल आदि के भी प्रयोग करता है । नवगीत का आकार लयपूर्ण और संगीतात्मक प्रवाह में विकसित हुआ है । नवगीतकारों ने अल्प प्रचलित अथवा अप्रचलित संस्कृत निष्ठ, तत्सम बाहुल्य शब्दों के स्थान पर रोजमर्रा के बहु प्रचलित सर्वबोध खुरदुरे, आंचलिक शब्दों के प्रयोग द्वारा अपने अनुभूतियों

* शोध छात्र हिन्दी,एम.एल.के.पी.जी. कालेज,बलरामपुर(उ.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

को अभिव्यक्ति दी है । अतः उर्दू, अंग्रेजी के अनेक प्रचलित शब्द नवगीतकारों की रचना
अनायास ही आ जाते हैं । यथा :–

"मात्र बहाना था गीतों का सृजन मुझे तो
अपना दर्द तुम्हारे दिल तक पहुँचाना था,
जो न अन्यथा कह पाता मैं सुन पाती तुम
कुछ ऐसा था राज तुम्हें जो समझाना था ।
मेरा दर्द न छू पाया जब हृदय तुम्हारा,
पत्थर का भी दिल पिघलाये, क्या होता है ।'

नवगीतकार बाल स्वरूप राही की उपर्युक्त रचना में उर्दू के प्रचलित शब्दों
स्वभाविक रूप से प्रयोग किया गया है । इसी प्रकार नवगीत में अंग्रेजी के शब्दों का प्रयो
स्वभाविक रूप से किया गया है :–

"आकाश के फ्रेम में जड़ा
चन्द्र दर्पण,
उसमें प्रतिबिम्बित होता
तुम्हारा शृंगार मुख ।
इस बिम्ब को
बार – बार
गीतों में बांधता
मेरा सुख ।'

तत्सम शब्दावली के प्रति नवगीतकार किसी प्रकार का व्यामोह नहीं रखते किन्तु
निर्विकल्प स्थिति में ये शब्द नवगीत में स्वमेव अपना स्थान निर्धारित करते हैं । यथा :

"कब तक रोऊँ, नींदे खोऊँ
अश्रु सलिल में रातें धोऊँ
मुझे नहीं अपनाते यदि तुम
मैं ही क्यों निज को अपनाऊँ
अब इस दिल को जिसमें तुम हो
पैरों तले कुचल डालूँगा
अपना विश्व बदल डालूँगा ।"

इस प्रकार नवगीतकारों ने भाषा सम्बन्धी किसी पूर्वाग्रह या पक्षपात को नहीं अ
है । नवगीतकारों ने अपनी पृथक पहचान बनाने वाली एक निजी और विशिष्ट भाषा का
किया है । नवगीतकारों ने जहाँ आंचलिक बोध को पृष्ठभूमि के रूप में रखा है वहीं आं

Scanned with OKEN Scanner

शब्दावली का भी खुलकर प्रयोग किया है । जिसके कारण लोक यथार्थ और लोकसौन्दर्य को सटीक अभिव्यक्ति मिली है । एक उदाहरण दृष्टव्य है :–

"नैहर कै अल्हड़पन
पीहर शर्मायें मन
रूठ–रूठ जाती हैं
बेला में हार की ।"

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर नवगीत की भाषा को निम्नलिखित रूपों में बाँटना समीचीन होगा:–

(1) बोलचाल की व्यवहारिक भाषा ।
(2) तत्सम शब्दावली से युक्त भाषा ।
(3) आंचलिक शब्दावली से युक्त भाषा ।

नवगीतकारों ने बोलचाल की व्यवहारिक भाषा में उर्दू के प्रचलित शब्दों जैसे दायरे, जुल्फ, बेगाने, अजनबी, कर्ज, जिन्दगी आदि शब्दों का तथा अंग्रेजी के मशीन, थर्मामीटर, ट्रेन, बल्ब, लाइट, फ्रेम जैसे शब्दों का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है । इसके अतिरिक्त बोल–चाल की व्यवहारिक भाषा के रूप में खड़ी बोली के तद्भव शब्दों, देशज शब्दों व प्रचलित तत्सम शब्दों का प्रयोग भी किया है ।

तत्सम शब्दावली से युक्त भाषा का प्रयोग नवगीतकारों ने मुख्यतः सांस्कृतिक, पौराणिक एवं ऐतिहासिक बिम्बों के निर्माण में किया है । यद्यपि तत्सम शब्दावली से युक्त भाषा का प्रयोग अधिक नहीं है । नवगीत में आंचलिक शब्दावली ये युक्त भाषा का प्रयोग लोक परिदृष्य, लोकसंस्कृति, लोकाचार और मधुर सरस शब्दों की अभिव्यक्ति के लिए किया गया है ।

2. नवगीत में बिम्बविधान

नवगीत बिम्बधर्मी काव्य है । बिम्बों का निर्माण कल्पना द्वारा होता है । नवगीतकारों ने बिम्ब के स्थूल और सूक्ष्म दोनों रूपों का प्रयोग किया है । डॉ0 नगेन्द्र के अनुसार "काव्य बिम्ब शब्दार्थ के माध्यम से कल्पना द्वारा निर्मित एक ऐसी मानस छवि है जिसके मूल में भाव की प्रेरणा रहती है ।" काव्य बिम्ब को शब्द चित्र का पर्याय मानते हुए डॉ0 महेन्द्र कार्तिकेय लिखते हैं कि "कविता में बिम्ब का सामान्य अर्थ चित्र है । कविता का निर्माण शब्दों से होता है । अतः काव्य बिम्ब का अर्थ शब्द चित्र होता है ।"

नवगीत में विभिन्न बिम्बों का मनोरम, प्रयोग हुआ है । युगबोध की अभिव्यक्ति के लिए नवगीतकारों ने वस्तुपरक बिम्बो का भी प्रयोग किया है । संक्षेप में नवगीतकारों द्वारा प्रयोग किये गये कुछ रूचिर बिम्बों के उदाहरण निम्नलिखित हैं:–

क. अलंकृत बिम्ब

Scanned with OKEN Scanner

नवगीतकारों ने अलंकृत बिम्बों में अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया है । बिम्ब प्रस्तुति अलंकृति होती है । यथा :–

"उनकी सिन्दूर रची मांग है भली
बादल के गाँव ज्यों गुलाब की गली ।"

यहाँ कल्पना द्वारा अलंकारों की मनोरम सशष्टि की गयी है ।

ख. प्रातिभ बिम्ब

प्रातिभ बिम्ब में गीतकार ने अपनी प्रतिभा, कल्पना अथवा अन्तदृष्टि के सहारे सु बिम्बों का प्रस्तुतीकरण किया है । यथा :–

"मन सी गोर–गुलाबी इच्छा
गदरी पलकें भारी ।"

ग. प्रतीकात्मक बिम्ब

नवगीतकारों ने प्रतीकात्मक बिम्बों का अधिक प्रयोग किया है । यथा :–

"यह अमराई कौन अगोरे
अब तो हुए हैं भार टिकोरे
अंग–अंग महुआ गदराये
आप न आये ।"

घ. सांकेतिक बिम्ब

लक्षण तथा व्यंजना के सहारे नवगीतकारों ने सांकेतिक बिम्बों का सफल प्रयोग है :–

"आंचल में अक्षत आँखों में जल
जूड़े में जूही और मांग में सिन्दूर
अलक तक पागें में दो बिछुए मौन
देह सहज कम्पन हिलकन से भरपूर ।"

ङ .मनोविश्लेषणात्मक बिम्ब

नवगीतकारों ने मनोविश्लेषण से सम्बन्धित बिम्बों का प्रयोग भी सफलतापूर्वक किय यथा :–

"लोग तट पर छोड़कर अपने बसन
घुस गये क्वारी नदी में निर्वसन ।।"

उपर्युक्त बिम्बों के अतिरिक्त नवगीतकारों ने सौन्दर्य बोधात्मक बिम्ब, जीवन्त मिथकीय, बिम्ब, ऐतिहासिक बिम्ब, नाट्य बिम्ब, प्रत्यक्ष बिम्ब आदि का भी सफल प्रयोग गीतों में किया है ।

Scanned with OKEN Scanner

(3) नवगीत की पद योजना और टेक पद्धति

नवगीत की पद योजना और टेक पद्धति गतानुगामी नहीं है । नवगीतकारों ने गीत के आरोह–अवरोह, लय, बलाघात तथा कथ्य के सम्प्रेषण को सुगम तथा प्रभावी बनाने के लिए मुक्त छन्दों की संरचना में अपने गीतों को प्रस्तुत किया है । मुक्त छन्द की संरचना में पद योजना प्रस्तुत करने के लिए नवगीतकारों ने बिम्बों अप्रस्तुत एवं मुहावरों आदि का सहारा लिया है । यथा :–

"री सुहागन
कुसुम ऋतु आयी
बागन–बागन
बौरी बौरी
बरस भर छायी
पौंरी – पौंरी
अब बैठी निर्जला उपासी
गंध भरी अब पूरे आंगन ।"

उपर्युक्त उदाहरण में गीत की पद योजना अपनी विशिष्ट व्यवस्था के कारण कथ्य की चित्रात्मक अभिव्यक्ति करने में समर्थ हो सकी है ।

नवगीत की टेक पद्धति पूर्ववर्ती काव्यधाराओं से भिन्न है । डॉ0 जीवन प्रकाश जोशी के अनुसार "गीत का स्थायी अथवा ध्रुव (टेक) से तात्पर्य है कि "गीत का वह अंश जो बार–बार गाया दुहराया जाता है । स्थायी गीत के मूल भाव को केवल टिकाये ही नहीं रखता वरन् अन्य संचारी भावों से परिपुष्ट बनाने में भी सहायक होता है । अतः गीत प्रभाव की घनीभूत अवस्था को प्राप्त होता है । इसका कारण है मूल भाव के साथ संचारियों की अन्विति ।"

नवगीत में टेक–पद्धति के विविध प्रयोग देखने में आते है । कुछ नवगीतों में टेक की पहली पंक्ति लम्बी रखी गयी है और दूसरी पंक्ति छोटी कर दी गयी है । यथा :–

"खिड़की पर आँख लगी देहरी पर कान
धूप भरे सूने दालान
हल्दी के रूप भरे सूने दालान ।"

कतिपय नवगीतों में केवल एक पंक्ति की टेक–पद्धति रखी गयी है तो कुछ में दो पंक्तियों की । यथा :–

"पात झरे फिर–फिर होंगे हरे
×× ×× ××
पर्वत पर आग चला बसंती रात में

Scanned with OKEN Scanner

नाच रहे हैं हम–तुम हाथ दिये हाथ में ।"

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि नवगीतकारों ने अपनी गीत रचनाओं में पारम्प गीतों से भिन्न तथा विविध प्रकार के प्रभावी टेक पद्धतियों का प्रयोग किया है।

(4) नवगीत की छन्द योजना एवं लयवत्ता

नवगीतों की छन्द योजना व लयवत्ता पूर्ववर्ती काव्यधाराओं से भिन्न है । नवगीत ने छन्दों को साम्प्रतिक भावबोध और शिल्प संरचना के प्रभाव से परिवर्तित करके गीत युगानुरूप नवीन स्वरूप प्रदान किया है ।

छन्द लयों पर आधारित होते हैं तथा लय का निर्माण नाद के आरोह–अवरोह से है । रवीन्द्र भ्रमर के अनुसार "लय की निष्पत्ति गति प्रवाह और यति विराम के पारस्परिक क्रमिक संघात से होती है ।" नवगीत में शास्त्रीय छन्दों का प्रयोग अधिक नहीं हुआ है अ नियमित छन्दों को तोड़कर नये छन्द बनाये गये हैं । अतः नवगीत में पुराने छन्दों के स्थान नये छन्दों का निर्माण हुआ है । ये सभी छन्द पिंगल शास्त्र के किसी न किसी छन्द आधारित है । नवगीत का छन्द स्वतः स्फूर्त नैसर्गिक साकार में लय द्वारा विनिर्मित होता पुराने तथा शास्त्रीय छन्दों के सम्प्रसारण, नये छन्दों के निर्माण, छन्दों के पदबन्धों के स्वैि चरणों का घटाना–बढ़ाना, नये छन्दों व धुनों की खोज आदि नवगीत के छन्द योजना व वत्ता का वैशिष्ट्य है। लयों के आधार पर छन्दों पर आधारित गीत अनेक प्रकार के होते यथा :–

"जब कभी भी डायरी के पृष्ठ खोलोगे
तुम अंजाने ही हमारा नाम बोलोगे ।"

उपर्युक्त पंक्तियां शास्त्रीय छन्दों पर आधारित है । यह 23–23 मात्राओं का निय छन्द है । नवग़ीतकारों ने उर्दू बहरों पर आधारित गीतों की भी सृष्टि की है। यथा :–

"चाँदनी ने तुम्हारा
दिया है पता
बात है बाँसुरी
चढ़ रहा है नशा ।"

हिन्दी की तरह इन बहरो में अक्षर या मात्राओं की गिनती नहीं करनी पड़ती । पाँच, छः को चुनकर उसमें हेर–फेर करने से बहर बन जाती हैं ।" उपर्युक्त पंक्तियाँ इसी तथ्य की करती है । नवगीतकारों ने लोकधुनों पर आधारित गीतों की सृष्टि भी पर्याप्त मात्रा में व । लोकगीतों की प्रचलित लयों को आधार बनाकर ऐसे गीतों की रचना की गयी है । नव में मुक्त छन्दों पर आधारित गीतों की प्रधानता है । संवेदनाओं की प्रभावी अभिव्यक्ति के नवगीतकारों ने ऐसे गीतों को प्रचुर मात्रा में लिखा है । मुक्त छन्द में गीत रचना के कारण में गेयता के स्थान पर पठनीयता आती है । यथा :–

Scanned with OKEN Scanner

"बे वजह उलझता है
यह मन भी
सुर्खरु गुलाबों में
चिकने उजले सवाल
छिलते हैं
मौसम के खुरदुरे जवाबों में ।"

अतः मुक्त छन्द की लयात्मकता नियमित छन्द की लयात्मकता से भिन्न होती है । यह नवगीत का वैशिष्ट्य है । "मुक्त छन्द में गीत रचना के कारण नवगीत में नवीन लयों का सन्निवेष हुआ है जिसके कारण पूर्ववर्ती गीतों की लयों की परिपाटी का खण्डन हुआ है ।"

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है नवगीत की छन्द योजना और लयवत्ता पूर्ववर्ती काव्य विधाओं से भिन्न है ।

संदर्भ –

1. रवीन्द्र भ्रमर : धर्मयुग : 2 जनवरी 66 : पृ0 17 ।
2. नवगीत दशक–2 : पृ0 16 ।
3. डॉ0 शिव कुमार मिश्र : नया हिन्दी काव्य : अनुसंधान प्रकाशन कानपुर (गोर्की का वक्तव्य) :पृ0 354
4. बाल स्वरूप राही : मेरा रूप तुम्हारा दर्पण : पृ0 52 ।
5. दिनकर सोनवलकर : पीढ़ियों का दर्शक : पृ0 40 ।
6. शेर जंग : एक और अनेक क्षण : पृ0 40 ।
7. राम ठाकुर : नवगीत दशक–1 (सं0 शम्भुनाथ सिंह) : पृ0 36 ।
8. डॉ0 नगेन्द्र : शोध और सिद्धान्त : नैशनल पब्लिशिंग हाउस : पृ0 109 ।
9. डॉ0 महेन्द्र कार्तिकेय : आधुनिक हिन्दी कविता के नये मूल्य : पृ0 62 ।
10. उमाकान्त मालवीय : मेंहदी और महावर : पृ0 97 ।
11. अनूप अशेष : नवगीत दशक : पृ0 36 ।
12. बुद्धिमान मिश्र : जाल फेंक रे मछेरे : पारिजात प्रकाशन, पटना 1983 : पृ0 53 ।
13. ओम प्रभाकर : पुष्प चरित : पृ0 32 ।
14. जहीर कुरैशी : (सं0 शम्भुनाथ सिंह) नवगीत दशक – 3 : पृ0 95 ।
15. डॉ0 जीवन प्रकाष जोशी : आधुनिक हिन्दी गीत काव्य : विषय और शिल्प : पृ0 233
16. राम ठाकुर : (सं0 शम्भुनाथ सिंह) : नवगीत दशक – 1 : पृ0 36 ।
17. ठाकुर प्रसाद सिंह : (सं0 शम्भुनाथ सिंह) : नवगीत दशक – 1 : पृ0 122 ।
18 धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी साहित्य कोष : पश0 680 ।
19 अखिलेष कुमार सिंह : (सं0 शम्भुनाथ सिंह) : नवगीत दशक–1 : पृ0 21 ।
20 उमाशंकर तिवारी : जलते शहर में : पृ0 49 ।
21 सुरेश सिंह : गजल लिखते वाले ध्यान दें : दिनमान : 14 अक्टूबर 84 : पृ0 48 एवं 49 ।
22. योगेन्द्र दत्त शर्मा : नवजीत अर्द्धशती : पृ0 49 ।
23 डॉ0 जीवन प्रकाश जोशी : आधुनिक हिन्दी गीत काव्य : विषय और शिल्प : पृ0 289 ।

Scanned with OKEN Scanner